जाने-माने शिक्षाविद्, साहित्यकार, समाजसेवी, टी.वी. चैनलों पर प्रवचनों का कीर्तिमान से अलंकृत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ जी से साक्षात्कार

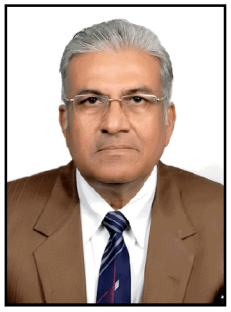

सुषमा : तातेड़ जी सादर अभिवादन है, स्वागत है आपका इस 'साहित्य चन्द्रिका' में। जैसा कि आपका व्यक्तित्व है, आपकी कर्मठता है, आप सुविख्यात साहित्यकार हैं, समाजसेवी हैं, टी.वी. चैनलों पर आपके प्रवचनों से सभी लाभान्वित हुए हैं। आप स्वयं में हस्ताक्षर है। हमारे पाठकगण आपकी साहित्य साधना, समाज साधना से रूबरू होना चाहेंगे। अपने विचारों से हमें लाभान्वित करें। जैसा कि लगता है जीवन जीने के प्रमुख दो मार्ग हैं—सतह से जानने की कोशिश तो दूसरा है—गहराई में जाकर। इस कला को जानना, तभी जीवन की सार्थकता है। हम शांति चाहते हैं। 'शांति' मन से होती है—इसके लिए मन शुद्ध होना जरूरी है। आपके प्रवचनों में हमने एक विशेष बात देखी है वह है—आत्मशुद्धि। कृपया इसे स्पष्ट कीजिए। फिर आगे बातें करते हैं।

डॉ. तातेड़ : धन्यवाद! सर्वप्रथम आपके प्रति, साहित्य चंद्रिका के प्रति आभारी हूँ, मुझे यह अवसर दिया। सही कहा है—'आत्मशुद्धि' की बात! इस शुद्धि में विचार और आचरण प्रमुख हैं। मन शुद्ध होगा तो विचार भी शुद्ध होंगे। तो आत्मसंतोष है, यही जीवन-दर्शन है, मेरे प्रवचनों के मर्म में!

सुषमा : यह जीवन एक सागर की भाँति है। इसी के ज्वारभाटा में हमारा मन और साहस है जो सदैव मंथन करता है। यही जीवन की कला में आप अपने व्यक्तित्व पर से हमें परिचय कराइए, व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी पहचान है। उसकी कार्य, उसकी कर्मठता है। जहाँ लगन है, निष्ठा है। अतः संक्षेप में बताने का कष्ट करेंगे।

डॉ. तातेड़ : अवश्य! सही कहा आपने जीवन का मंथन करना, अपना विश्लेषण करना है, जो सही मार्ग दिखलाता है।

मेरा जन्म राजस्थान के बाड़मेर जिले के छोटे से गाँव कानोड़ा में हुआ था। उस समय हमारे गाँव में न बिजली थी, न पानी, न सड़क, न स्कूल! गाँव के कुएँ का पानी खारा होता था, तो पीना मुश्किल था। हम वर्षा के समय उस पानी को टाँकों में भर पीने लायक करते। मेरे पिताश्री मुलतान जी, मेरी माँ चम्पादेवी, हम पाँच भाई, चार बहनें! पिताजी की गाँव में किराणा की छोटी-सी दुकान थी। हमारे माता-पिता तेरापंथी होने के कारण हममें वही संस्कार मिले जो आचार्य तुलसी के विचारों को साकार करते रहे हममें! हमने अपने जीवन-मूल्यों को समझा, और अनुसरण किया। हमारा पैतृक गाँव जसोल था वह भी बाड़मेर जिले में आता है। यहाँ पर प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की। सन् 1961 में मैंने महेश हायर सेकण्डरी स्कूल जोधपुर में 9वीं से 11वीं तक पढ़ाई की। नवीं से 11वीं तक स्टूडेंट यूनियन का मंत्री व अध्यक्ष रहा। वहीं से मुझमें सुझावात्मक, समर्पण का भाव जागा, सेवाभाव की प्रवृत्ति वहीं से जन्मी और पनपी है। आप सभी को आश्चर्य होगा मेरी सगाई भी जसोल के पास आसाढा गाँव में जन्मी पाँचवीं पास लड़की लक्ष्मी भंसाली से हुई, जब मैं सातवीं में पढ़ता था। भले ही हमारे गाँव और उनके गाँव में दस कि.मी. की दूरी होगी पर हमने एक-दूसरे का चेहरा नहीं देखा! अब समय कितना बदल गया! गाँव शहर की ओर और शहर महानगर की ओर। बिजली, पानी, सड़क की व्यवस्था है! बचपन में सगाई, सोच सकते हैं। आज तो जेल हो जाए। जेल क्या हँसी हो जाए—गुड्डा-गुड्डी का खेल है क्या? मैं भी अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र, उनकी इच्छा से मेरी शादी लक्ष्मी से हो गई। मेरी पढ़ाई! मुझे इंजीनियर बनना था। इसलिए हम दोनों ने 2 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया। इसी बीच हम संत संपतमल जी जो आचार्य तुलसी के शिष्य थे उनसे दीक्षा ली। आचार्य तुलसी की कृपा से हम दोनों सुश्रावक बन गए। धर्म-ध्यान, त्याग में अने जीवन को समर्पित किया। बचपन से ही सेवा का संस्कार था। इसी कारण अपने सेवाकाल में विशिष्ट कार्य किए और चार बार सम्मानित भी हुआ। जब आचार्य तुलसी के दर्शनार्थ बीकानेर गया था तब आचार्य जी ने मेरा भाग्य ही बदल दिया। मुझे परमार्थिक शिक्षण संस्था,

लाडनूँ में मानद सेवा देने हेतु वहाँ मुझे संयोजक बनाया। मैं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का मानद सलाहकार और प्रोफेसर होने के फलस्वरूप जैन धर्म के चारों संप्रदायों के तीन हजार साधु-साध्वियों की नि:शुल्क उच्च शिक्षा ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन, पीएच.डी. दिलाने में योग्य समझा गया। 2001 में पीएच.डी. करने के बाद मेरे द्वारा योग-दर्शन विषयों में अभी तक 200 से ऊपर पीएच.डी. स्तर के शोध-ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, जो सभी प्रकाशित है। भारत की 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा अनुमोदित होकर पढ़ाए जा रहे हैं, यहाँ तक कि 200 शोध-ग्रन्थ भारत की सेंट्रल लाइब्रेरियों में भी उपलब्ध है।

अपने परिचय में और बात कहनी है कि मेरे जीवन-दर्शन पर भारत सरकार के उपक्रम जोधपुर आकाशवाणी ने तीन घंटे की फिल्म जो आठ भागों में उपलब्ध है बनाई है, जो कि यूट्यूब पर देखी जा सकती है। जैन उपासक के रूप में पर्यूषण आदि पर धार्मिक संस्थाओं में दिए गए 500 से अधिक प्रवचन यूट्यूब पर मौजूद है।

मैं अपनी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ। अपने जीवन-दर्शन को सभी को दिग्दर्शित किया है। अंत में इतना कहूँगा कि मैं आत्मज्ञान जानने का पिपासु हूँ। सीमंधर स्वामी भगवान् को रोज शीघ्र मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करता हूँ। मैं ज्ञाता-दृष्टा शुद्ध आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। अकर्त्ताभाव की साधना, प्राप्त मन, वचन कार्य से समस्त जगत् के किसी प्राणी को मेरे द्वारा किंचित् कष्ट न हो, मेरा मन किसी क्षण बिगड़े नहीं! मनसा, वाचा, कर्मणा से मेरा शरीर कर्म के लिए बना है।

सुषमा : तातेड़ जी, गजब है आपका व्यक्तित्व, आपके विचार! हम तो धन्य हो गए। फिर आपने अपने जीवन-दर्शन से, आचार-विचरा को बताकर मन की शुद्धि को बताया है, आत्म-परीक्षण, आत्म-निरीक्षण ही जरूरी है। क्योंकि अपनी आत्मा को टटोले तो नर से नारायण हो जाएँगे। धर्म ही व्यक्ति का आचरण है और व्यवहार संहिता! जो संयमित करता है वही नियंत्रित करता है। यही ज्ञान का प्रशस्त मार्ग है। आपने इस बात को भी स्पष्ट किया कि आप मोक्ष चाहते हैं, क्योंकि मोक्ष के तीन सोपान है—ज्ञान, कर्म और भक्ति। इन सोपानों को चरितार्थ करने के लिए आपके सभी प्रवचन हमारे लिए प्रकाश-स्तंभ है। आपके भाव और अनुभूति ने हमें ज्ञानात्मक दृष्टि दी है, भावात्मक दृष्टि दी है। आपके विचार, आपके अनुभव, साहित्य, दर्शन, योग आदि विविध क्षेत्रों से हम संकल्प लेते है। समाज के निर्माण में चरित्र के निर्माण में धन्यवाद तातेड़ जी।

प्रस्तुति—डॉ. सुषमा शर्मा
सचिव, राज. लेखिका साहित्य संस्थान, जयपुर
परामर्शक—कलमप्रिया लेखिका साहित्य संस्थान, जयपुर
संपादक मंडल—'साहित्य चन्द्रिका', साहित्यागार, जयपुर
डी-20, चौमूं हाउस, जगनपथ, सी-स्कीम, जयपुर
फोन : 0141-2372523

❖❖❖